संपादकीय

संपादकीय

गणेश चतुर्थी के बहाने....

भाद्रपद मास की चतुर्थी आते ही पूरे देश में उल्लास की लहर दौड़ पड़ती है। ढोल–ताशों की गूंज, आरती की स्वर–लहरियाँ और गली–गली में सजते पंडाल—यह दृश्य किसी को भी अपनी ओर खींच लेता है। 'गणेश चतुर्थी' अब केवल पूजा का पर्व नहीं रहा; यह भारत की आस्था, संस्कृति और सामाजिक चेतना का दर्पण है। लेकिन सवाल यह है कि क्या हम इस पर्व को केवल भक्ति और मनोरंजन तक सीमित रख रहे हैं या इसके बहुआयामी संदेशों को भी समझ रहे हैं? गणपति को 'विघ्नहर्ता' कहा जाता है। किसी भी शुभ कार्य से पहले उन्हें स्मरण करने की परंपरा इसी कारण है। गणेश जी का बड़ा मस्तक ज्ञान का प्रतीक है, लंबे कान सुनने की क्षमता का, और छोटा मुख संयम का संदेश देता है। क्या हम इस प्रतीकवाद को अपने जीवन में उतार पाए हैं? या फिर यह सब केवल आरती की थालियों और शोरगुल में दब कर रह गया है?

गणेशोत्सव को सार्वजनिक रूप देने का श्रेय लोकमान्य तिलक को जाता है। अंग्रेज़ों के दमन के दौर में उन्होंने इस पर्व को सामूहिक चेतना और राष्ट्रीय एकता का माध्यम बनाया। यह सवाल आज भी प्रासंगिक है क्या गणेशोत्स समाज को एकजुट करने वाला मंच है या केवल प्रतियोगिता और दिखावे की दौड़ बनकर रह गया है? यह पर्व समाज में मेल–मिलाप के लिए अवसर देता है। सामूहिक आरती, सांस्कृतिक कार्यक्रम और सेवा–कार्य इसकी खूबसूरती हैं। लेकिन क्या आज हर जगह वही सहयोग और समर्पण दिखता है? या फिर ऊँची–ऊँची मूर्तियों और महंगे पंडालों की होड़ ने सामूहिकता की आत्मा को पीछे धकेल दिया है?

गणेशोत्सव के दौरान हज़ारों मूर्तिकार, कारीगर, फूल–माला विक्रेता, मिठाईवाले, पंडाल बनाने वाले—सबको इससे रोज़गार मिलता है। अनुमान है कि अकेले महाराष्ट्र में हर साल हज़ारों करोड़ रुपये की अर्थव्यवस्था इससे जुड़ी है। किंतु इस उत्सव में एक और बड़ा सवाल पर्यावरण का है। प्लास्टर ऑफ पेरिस की मूर्तियाँ और रासायनिक रंग नदियों को ज़हरीला बना रहे हैं। विसर्जन के बाद मछलियों की मौत, प्रदूषित जल और गंदगी—क्या यही 'विघ्नहर्ता' की पूजा का परिणाम होना चाहिए? सौभाग्य से अब कई जगहों पर पर्यावरण–मित्र पहल शुरू हुई हैं—मिट्टी की मूर्तियाँ, सामूहिक कृत्रिम तालाब में विसर्जन जैसी योजनाएँ लागू

की गयी हैं। यह सब यही दर्शाता है कि आस्था और पर्यावरण साथ–साथ चल सकते हैं। लेकिन प्रश्न यह है कि क्या समाज का बड़ा हिस्सा अब भी इन विकल्पों को अपनाने के लिए तैयार है?

आज गणेशोत्सव की गूंज केवल मुंबई, पुणे या नागपुर तक सीमित नहीं। दुबई, लंदन, न्यूयॉर्क तक में गणपति बप्पा की आरती गूंजती है। यह प्रवासी भारतीयों के लिए सांस्कृतिक जुड़ाव का सेतु बन चुका है। सोशल मीडिया और ऑनलाइन दर्शन ने भी इसे वैश्विक पहचान दी है। गणेश चतुर्थी का वास्तविक संदेश यही है कि बुद्धि, विवेक और एकता से ही हर विघ्न दूर किया जा सकता है। यदि हम पूजा में भक्ति दिखाएँ लेकिन व्यवहार में प्रदूषण फैलाएँ, तो यह विरोधाभास ही है। आज आवश्यकता है कि हम इस पर्व को जिम्मेदारी के साथ मनाएँ। सामूहिकता के मंच को भाईचारे और सेवा का माध्यम बनाएँ। आर्थिक गतिविधियों को स्थानीय कारीगरों और छोटे व्यवसायियों तक पहुँचाएँ। यह पर्व केवल उत्सव नहीं रहेगा, बल्कि आने वाली पीढ़ियों के लिए एक सांस्कृतिक–पर्यावरणीय धरोहर बनेगा। और तभी हम सचमुच कह पाएँगे "गणपति बप्पा मोरया, मंगलमुर्ती मोरया!"

आखर' के इस अंक में शोधालेखों के साथ साथ कविता, कहानी और लेख शामिल है। आशा है आपको यह अंक पसंद आएगा। आपका स्नेह और सहयोग हमें हमेशा मिलता रहे ताकि हम **'आखर'** के माध्यम से साहित्य की सेवा कर सकें।

इति नमस्कारन्ते।

प्रधान संपादिका
प्रतिभा मुदलियार

This work is licensed under CC BY-NC 4.0

https://doi.org/10.5281/zenodo.17072297